कामरेड कोटेश्वरलु की क्रांतिकारी जीवन–यात्रा

1954 26 नवम्बर को जन्म आंध्रप्रदेश, करीमनगर जिला, पेद्दापल्ली कस्बे के एक मध्यम वर्गीय परिवार में। मधुरम्मा व वेंकटय्या की तीसरी संतान।

1969 पृथक तेलंगाना राज्य आंदोलन में सक्रिय भूमिका।

1974 छात्र आंदोलन में सक्रिय भूमिका। करीमनगर में स्नातक की पढ़ाई।

1974 पार्टी संगठक के रूप में कार्य शुरू।

1977 पार्टी के तेलंगाना क्षेत्रीय अधिवेशन में प्रतिनिधि के रूप में भागीदारी।

1978 'जगित्याल विजयी यात्रा' के रूप में सुविख्यात किसानों की क्रांतिकारी उभार में अहम भागीदारी।

1978 पहली बार गठित पार्टी की करीमनगर–आदिलाबाद संयुक्त जिला कमेटी के सचिव के रूप में चुनाव।

1980 सितम्बर में पुरानी भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) के आंध्रप्रदेश अधिवेशन में राज्य कमेटी सदस्य के रूप में और उसके बाद में राज्य कमेटी सचिव के रूप में चुनाव।

1986 दण्डकारण्य आंदोलन में जिम्मेदारियों का निर्वाह।

1987 फरवरी में डीके में पार्टी का पहला अधिवेशन – फारेस्ट कमेटी सदस्य के रूप में चुनाव।

1993 सीओसी सदस्य के रूप में को–ऑप्शन और बंगाल का प्रभार।

1995 पुरानी भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) के अखिल भारतीय विशेष अधिवेशन में केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में चुनाव।

2001 पुरानी भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) की 9वीं कांग्रेस में सीसीएम के रूप में चुनाव। पीबीएम व एनआरबी सचिव के रूप में जिम्मेदारियां।

2004 विलय में प्रमुख भूमिका। नई पार्टी भाकपा (माओवादी) के गठन के बाद एकीकृत केन्द्रीय कमेटी सदस्य, पोलिटब्यूरो सदस्य और ईआरबी सदस्य के रूप में जिम्मेदारियां।

2007 एकता कांग्रेस – 9वीं कांग्रेस में केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में दोबारा चुनाव। पोलिटब्यूरो व ईआरबी में सदस्य के रूप में जिम्मेदारियां।

1993&11 18 सालों तक केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में काम।

2001&11 11 सालों तक पोलिटब्यूरो सदस्य के रूप में काम।

2011 24 नवम्बर को शहादत – पश्चिम बंगाल के पश्चिमी मेदिनीपुर जिले के बुरिशोल जंगलों में कुशबोनी के पास हुई एक फर्जी मुठभेड़ में।

पार्टी पत्र : 1/2012 पार्टी सदस्यों तक

भारतीय क्रांति के महान नेता, जनयुद्ध के सेनानी व पोलिटब्यूरो सदस्य

कामरेड कोटेश्वरलु अमर रहें!

क्रांतिकारियों की हत्याओं से आंदोलन को आगे बढ़ने से रोकना असंभव है!

केन्द्रीय कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

भारतीय क्रांति के महान नेता, जनयुद्ध के सेनानी व पोलिटब्यूरो सदस्य कामरेड कोटेश्वरलु अमर रहें!

क्रांतिकारियों की हत्याओं से आंदोलन को आगे बढ़ने से रोकना असंभव है!

प्यारे कामरेडो!

भारत के क्रांतिकारी आंदोलन में एक और योद्धा धराशायी हो गए। 24 नवम्बर 2011 के दिन भारतीय क्रांति के महान नेता, पोलिटब्यूरो सदस्य और हमारे प्यारे साथी कामरेड मल्लोझुला कोटेश्वरलु को हमने खो दिया। यह दिन हमारे क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में एक और काले दिन के रूप में अंकित होगा। क्रांतिकारी आंदोलन के खिलाफ देशव्यापी दमनचक्र और शोषित जनता पर अन्यायपूर्ण युद्ध चलाने वाला फासीवादी शासक गिरोह – सोनिया–मनमोहन सिंह–प्रणब–चिदम्बरम–जयराम रमेश ने बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से सांठगांठ कर कामरेड कोटेश्वरलु की हत्या की साजिश रचकर 'कोवर्ट' आपरेशन की योजना बनाई थी। केन्द्रीय आइबी और बंगाल राज्य खुफिया विभाग के साथ समन्वय से कमण्डो बलों की हाई कमान के क्रूर अधिकारियों और कोबरा–सीआरपीएफ के महानिदेशक विजय कुमार की अगुवाई में काउण्टर इंसर्जेन्सी एसपी मनोज वर्मा की मदद से कोवर्ट तरीके से उन्हें उस समय बंदी बनाया जब वे निहत्थे थे। दुश्मन के भाड़े के हत्यारे गिरोह ने उन्हें कायरता से अकथनीय यातनाएं दीं। उनके शरीर को बुरी तरह तोड़ दिया। दाईं आंख निकाल दी। हाथ की उंगली काट दी। हाथ–पैर तोड़ दिए। पसलियां तोड़ डालीं। मुंह में गोली मार दी ताकि चेहरे को नहीं पहचाना जा सके। पैरों को हीटरों से जला दिया। आखिर में पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर जिले के कुशबोनी जंगल में बुरिसोल गांव के पास ले जाकर उन्हें गोली मारकर मुठभेड़ की कहानी फैला दी गई। अपने प्यारे नेता कामरेड किशनजी ने यह ऐलान करते हुए कि जनता के लिए जान कुरबान करने वाले

- एकता कांग्रेस – 9वीं कांग्रेस द्वारा निर्देशित केन्द्रीय, प्रधान व फौरी कार्यभार को पूरा करते हुए आधार इलाकों का निर्माण करेंगे!
- नेतृत्व की रक्षा करते हुए पार्टी को बोल्शेविक की तरह दुश्मन के लिए अभेद्य गुप्त पार्टी के रूप में विकसित करेंगे!
- दुश्मन की एलआईसी रणनीति के तहत चल रहे फासीवादी ग्रीन हंट आक्रमण को पराजित करने के लिए अथक संघर्ष करेंगे! गुरिल्ला युद्ध को तेज करेंगे!
- कामरेड कोटेश्वरलु की शहादत की स्फूर्तिभावना से हमारी पार्टी की लाइन पर दृढ़ता से खड़े होकर रंग–बिरंगे संशोधनवाद, दक्षिणपंथी अवसरवाद और वामपंथी दुस्साहसवाद के खिलाफ संघर्ष करेंगे!
- लालगढ़ व नारायणपटना की तर्ज पर जन विद्रोहों का निर्माण करते हुए जनाधार को व्यापक बनाएंगे!
- दीर्घकालीन जनयुद्ध को आगे बढ़ाने के लिए मजबूत शहरी व मैदानी आंदोलन का निर्माण करेंगे! नए इलाकों व मोर्चों में क्रांतिकारी आंदोलन का विस्तार करेंगे!

14 जनवरी 2012

केन्द्रीय कमेटी

भाकपा (माओवादी)

नीतियों के खिलाफ जारी संघर्ष, जमीन, रोटी व मुक्ति के लिए जारी जनवादी संघर्ष, राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष व विस्थापन विरोधी संघर्ष – ये सब इसी संकट का नतीजा है। साम्राज्यवादियों की इस जल्दबाजी की वजह यह है कि वे चाहते हैं कि इसके पहले कि यह आर्थिक संकट क्रांतिकारी संकट के रूप में तब्दील हो, इन आंदोलनों का सफाया किया जाए ताकि दुनिया को मनचाहे तरीके से लूटा जा सके।

प्यारे कामरेडो!

कामरेड कोटेश्वरलु की फर्जी मुठभेड़ के सम्बन्ध में स्पष्ट जानकारी अभी हमारी केन्द्रीय कमेटी को मिलनी बाकी है। इस घटना के पीछे कारणों और वहां की ठोस परिस्थितियों के बारे में सीसी को अभी गहराई से आकलन करना बाकी है। बहरहाल, सीसी की तीसरी बैठक के बाद एक पीबीएम व तीन सीसी सदस्यों की गिरफ्तारी व अब एक अन्य पीबीएम कामरेड कोटेश्वरलु की हत्या से हमारी पार्टी को भारी क्षति हुई है। पिछले पांच सालों में हमारी पार्टी बेहद महत्वपूर्ण कामरेडों को खो दिया है। क्रांतिकारी आंदोलन में लम्बे समय से खड़े होकर अपार अनुभव प्राप्त करके विभिन्न क्षेत्रों में निपुणता हासिल करने वाले महान कामरेडों को खो दिया है। वे सब महान नक्सलबाड़ी के वारिस थे जिसने भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास को नई दिशा दी। खासकर तब जब हम दुश्मन द्वारा थोपे गए आपरेशन ग्रीन हंट के हमलों का मुकाबला करते हुए विभिन्न तबकों की जनता को गोलबंद कर आंदोलन को मजबूती से आगे बढ़ा रहे हों, ऐसे कामरेडों की मृत्यु हमारे लिए बड़ा नुकसान है। आंदोलन में उनके स्थानों की भर्ती करना आसान बात नहीं है। लेकिन सच्चाई यह है कि वे सब दीर्घकालीन लोकयुद्ध से ही पैदा होकर विकसित हुए थे। कठोर वर्ग संघर्ष ने उन्हें फौलाद बनाया। आगे भी ऐसे कई क्रांतिकारी इसी प्रकार पैदा होते रहेंगे। जनता और जन आंदोलनों ने ही कामरेड कोटेश्वरलु जैसे साहसिक व समर्पित क्रांतिकारियों को पैदा किया। जगित्याल से जंगलमहल तक उनके द्वारा फैलाई गई क्रांति की खुश्बू से अपने को सशस्त्र बनाकर मजदूर, किसान और तमाम उत्पीड़ित जनता भारत की नव जनवादी क्रांति को विजय के पथ पर आगे बढ़ाकर रहेगी। दीर्घकालीन लोकयुद्ध को दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ाकर हम उनकी कमी को पूरा कर लेंगे। जनता ही इतिहास का निर्माता है। अंतिम विजय जनता की होगी।

क्रांतिकारियों को मौत नहीं है, अंतिम जीत जनता की ही है, क्रांति की विजय को रोकने वाली कोई भी ताकत इस धरती पर नहीं है, और अंतिम पतन व विनाश शोषक–उत्पीड़क वर्गों की ही है; शहादत को प्राप्त किया।

कामरेड कोटेश्वरलु एक महान क्रांतिकारी थे। दुश्मन द्वारा दी गई यातनाओं की परवाह न करने वाले साहसी थे। वे एक आदर्शवान नेता थे जिन्होंने अपना सुर्ख लहू बहाकर पार्टी की गोपनीयता को अक्षुण्ण रखकर क्रांति का लाल परचम ऊंचा उठाए रखा।

कामरेड कोटेश्वरलु नक्सलबाड़ी की अगली पीढ़ी के क्रांतिकारियों में से एक थे। नक्सलबाड़ी की अस्थाई पराजय के बाद उससे मिली शिक्षा से प्रभावित होकर जब पार्टी देश में एक और क्रांतिकारी उभार पैदा करने की तैयारियां कर रही थी, उस समय उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत की। उन तैयारियों का वे खुद हिस्सा बने थे और जब जनयुद्ध देश भर में फैलते हुए उच्च स्तर में विकसित हो रहा था, तब उसके साथ वे भी विकसित हुए थे। उसके प्रमुख नेताओं में एक बने थे। कामरेड कोटेश्वरलु 38 सालों के अपने अपार अनुभव से क्रांतिकारी आंदोलन के साथ कदम–दर–कदम आगे बढ़े थे। पार्टी कतारों का विश्वास जीतकर दीर्घकालीन जनयुद्ध की राह में वे एक साहसिक सेनानी के रूप में खड़े रहे। क्रांतिकारी आंदोलन के विस्तार के तहत कई इलाकों में काम करते हुए उन्होंने जन आंदोलनों का निर्माण किया। पार्टी के विकासक्रम में कई जिम्मेदारियां उठाकर क्रांतिकारी आंदोलन को नई बुलंदियों में पहुंचाने में उन्होंने अथक प्रयास किया। क्रांतिकारी दृढ़ संकल्प, प्रतिबद्धता, पहलकदमी, सूझबूझ, कामरेडाना प्रेम, अध्ययनशीलता, सेवा तत्परता आदि इस महान शहीद के आदर्श तमाम कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों के लिए सदा अनुसरणीय हैं। प्रह्लाद, प्रदीप, शंकर, रामजी, बिमल, किशनजी समेत कई नामों से काम कर उन्होंने क्रांतिकारी आंदोलन में अपना एक खास स्थान बनाया। शुरूआती दिनों में गांवों में किसान और साथी उन्हें प्यार से 'कोटि' या 'कोटन्ना' कहकर बुलाते थे। कामरेड कोटेश्वरलु ने अपनी आखिरी सांस तक क्रांतिकारी सिद्धांतों की खातिर, जिन पर उनका अटल विश्वास था, बहादुरी के साथ लड़ते हुए क्रांतिकारी आंदोलन की निस्वार्थ रूप से सेवा की। भारतीय क्रांति के बलिदानी इतिहास में अपना नाम लाल अक्षरों में अंकित किया। भावी पीढ़ियों के लिए संघर्षमय आदर्श स्थापित किया।

अपने लम्बे क्रांतिकारी जीवन में उन्होंने कई क्षेत्रों में प्रमुख भूमिका

निभाई। देश की मुक्ति की खातिर अपना सब कुछ न्यौछावर कर आखिर में ऐतिहासिक लालगढ़ की संघर्षशील मिट्टी में अपना खून बहाया। शहीद कामरेड कोटेश्वरलु को केन्द्रीय कमेटी समूची पार्टी, जन मुक्ति गुरिल्ला सेना, क्रांतिकारी जन कमेटियों, क्रांतिकारी जन संगठनों और क्रांतिकारी जनता की ओर से नम आंखों से सम्मान व विनम्रता के साथ अपना सिर झुकाकर लाल–लाल श्रद्धांजलि पेश करती है। उनके द्वारा दिए गए संघर्ष के अनुभवों से सीखते हुए उनके द्वारा स्थापित आदर्शों से प्रेरणा पाते हुए उनके सपनों को साकार करने की शपथ लेती है। जन संघर्षों, प्रतिरोधी आंदोलनों और जनयुद्ध को तेज करने का संकल्प लेती है। आज दुश्मन वर्ग कामरेड कोटेश्वरलु की हत्या कर क्रांतिकारी आंदोलन को भारी क्षति पहुंचाने की जश्न मना रहे हैं। हम अपने आंसुओं को पोंछकर तमाम शोषित जनता की ओर से तथा समूचे क्रांतिकारी शिविर की ओर से इस चुनौती को स्वीकार करेंगे और स्पष्ट रूप से दुश्मनों से ऐलान करेंगे कि माओवादी जनयुद्ध को देश की चारों ओर फैलाकर और उसे बुलंदियों पर पहुंचाकर कोटेश्वरलु की हत्या का जरूर बदला लेंगे। आइए, दिल की गहराइयों से फूट रहे रुदन व बहते आंसुओं को रोककर वर्गीय घृणा के भड़कते शोलों में इस दूभर शोषक व्यवस्था को जलाकर राख करने की शपथ लें। शहीद कामरेड कोटेश्वरलु के अधूरे मकसद को पूरा करने का फिर एक बार संकल्प लें।

उनकी मौत से पुत्र–शोक में डूबी उनकी मां मधुरम्मा, उनकी जीवनसंगिनी, अन्य परिजनों, रिश्तेदारों, दोस्तों और उनके साथ काम करने वाले तमाम कामरेडों के प्रति इस मौके पर केन्द्रीय कमेटी गहरी संवेदना प्रकट करती है। उनकी शहादत से एक आत्मीय साथी से वंचित होकर दुखित हुए पार्टी कतारों, क्रांतिकारी जनता और उनके तमाम दोस्तों से केन्द्रीय कमेटी दुख बांट लेती है। हम सबके आंसुओं और दुख–तकलीफों के लिए वही हत्यारे जिम्मेदार हैं जिन्होंने कामरेड कोटेश्वरलु की हत्या की। इसलिए केन्द्रीय कमेटी का यह आह्वान है कि उनके खिलाफ दुगुनी वर्ग–घृणा व दृढ़ संकल्प से लड़ा जाए।

क्रांति के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर, दुश्मन के हाथों में पड़ने पर भी अपने फौलादी संकल्प को जरा भी ढीला न कर, खून के आखिरी कतरे तक दुश्मन के खिलाफ संघर्ष जारी रखने वाले कामरेड मल्लोझुला कोटेश्वरलु की लम्बी क्रांतिकारी जिंदगी के प्रमुख पहलुओं पर नजर डालें।

व्यक्तियों के प्रति आभार प्रकट करती है। इस तरह की जनवादी व क्रांतिकारी चेतना और भाईचारा से दुनिया भर में सर्वहारा के आंदोलनों को निरंतर प्रेरणा मिलती रहेगी।

देश के सभी राज्यों व गुरिल्ला जोनों में समूची पार्टी, पीएलजीए और जनता ने अपने आंसुओं को पोंछकर कसम खाई कि कामरेड कोटेश्वरलु के अधूरे मकसद को पूरा करने के लिए जनयुद्ध को देश के कोने–कोने में फैलाएंगे; लाखों–करोड़ों लोगों को क्रांतिकारी आंदोलन में गोलबंद करेंगे; तथा हजारों 'कोटेश्वरलु' को तथा कई 'लालगढ़' व कई 'नारायणपटना' पैदा करेंगे। इस हत्यारी राजसत्ता को उखाड़ फेंककर नई जनवादी क्रांति को सफल बनाने की कसम खाई।

कामरेड कोटेश्वरलु के अरमानों को ऊंचा उठाए रखेंगे! हजारों कोटश्वरलु पैदा करने जनयुद्ध को तेज करेंगे!

कामरेड कोटेश्वरलु ऐसे योद्धा थे जो वर्ग संघर्ष में तपकर फौलाद बने थे। पार्टी में वे कई उतार–चढ़ावों और घुमावों–फिरावों के साक्षी रहे। पिछले करीब चार दशकों में उन्होंने क्रांतिकारी आंदोलन में हजारों कार्यकर्ताओं और सैकड़ों नेतृत्वकारी ताकतों के साथ वे मिलकर काम किया जिनमें से कई उनके साथ काम करते–करते शहीद होते गए। पग–पग पर खतरों और तीखे दमन के बावजूद उन्होंने साहस व दृढ़ता के साथ विभिन्न इलाकों में आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया। फासीवादी दमनकाण्ड व हत्याकाण्डों के बीचोंबीच ही वे एक चट्टान की तरह खड़े रहे। उनकी मृत्यु से भारतीय क्रांति को निश्चित रूप से जबर्दस्त क्षति पहुंची।

कामरेडो! दुश्मन कामरेड कोटेश्वरलु की हत्या कर खुशियां मना रहा है। वह क्रांतिकारी आंदोलन का जड़ से सफाया करने की जल्दी में है। यह जल्दबाजी महज इत्तेफाक से नहीं, बल्कि रोज–रोज नए–नए रूपों में उजागर हो रहे वैश्विक आर्थिक संकट का परिणाम ही है। इस संकट के प्रति समूची दुनिया में जनता का गुस्सा फूट पड़ रहा है। अरब देशों में आए जन संघर्षों के उभार, विभिन्न राष्ट्रीयताओं के मुक्ति आंदोलन, यूरोप में जारी जन आंदोलन, 90 से ज्यादा देशों में दावानल की तरह फैले हुए 'वालस्ट्रीट पर कब्जा करो' आंदोलन, फिलिप्पींस, भारत आदि देशों में आगे बढ़ रहे माओवादी जनयुद्ध, हमारे देश में शासक वर्गों के शोषण–उत्पीड़न व ढोंगी विकास की

पार्टी कतारों का भरोसा जीतने वाले प्यारे नेता

कामरेड कोटेश्वरलु ने अपने 38 सालों की क्रांतिकारी जिंदगी में हजारों पार्टी कैडरों का भरोसा जीत लिया। जनता का अपार प्यार उन्हें प्राप्त था। कैडरों की जरूरतों पर वे ध्यान दिया करते थे। और उन्हें याद से पूरा करने की कोशिश किया करते थे। जिनसे मिलना संभव हो उनसे जरूर मिला करते थे। जब संभव नहीं तो उन्हें पत्र जरूर लिखते थे। वे अपने साथियों और गुरिल्लों से जनयुद्ध में उनके अनुभवों की जानकारी ले लेते थे। उनसे मिलकर हर साथी को ऐसा लगता था जैसे वे एक राजनीतिक शिक्षक से मिल रहे हों जो उनसे प्यार करते हैं और उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। क्रांतिकारी युद्ध में घायल होने वाले साथियों का इलाज करवाने पर वे खास तौर पर ध्यान देते थे। उनका हौसला बढ़ाते हुए उनकी शारीरिक स्थिति के अनुसार काम देते थे। समस्याओं से घिरे कामरेड यह कामना करते हैं कि कामरेड कोटन्ना उनके पास हो या फिर उनके द्वारा लिखित पत्रों को बार–बार पढ़कर प्रेरणा पाते हैं।

हत्या के प्रति देश–विदेश में विरोध

कामरेड कोटेश्वरलु की जघन्य हत्या की खबर फैलते ही देश–विदेश की माओवादी पार्टियों और संगठनों; जनवादी, प्रगतिशील व क्रांतिकारी संगठनों और अमनपसंदों ने भारत सरकार व पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी सरकार के प्रति अपना गुस्सा व अक्रोश प्रकट किया। इस निर्मम हत्या का पुरजोर खण्डन किया। कामरेड कोटेश्वरलु की हत्या के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए हमारी पार्टी के नाम संदेश भेजे। कई मानवाधिकार संगठनों, जनवादी संगठनों, कई लेखकों, कलाकारों, पत्रकारों व मीडिया–मित्रों ने कोटेश्वरलु की हत्या की निंदा करते हुए सरकार से इस पर स्वतंत्र व निष्पक्ष जांच करने की मांग की। कई जाने–माने लोगों ने पत्रिकाओं में लेख लिखे। इस पृष्ठभूमि में 15 से 22 जनवरी तक भारत के मध्य भाग में जारी जनयुद्ध के समर्थन में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भाईचारा सप्ताह घोषित किया गया। एक शब्द में कहा जाए, तो देश–विदेश में मौजूद मेहनतकश, जनवादी व क्रांतिकारी खेमा पूरा इसे अपने नुकसान के रूप में महसूस किया। इसे अपने खुद के शोक के रूप में महसूस किया।

इस मौके पर हमारी पार्टी की ओर से केन्द्रीय कमेटी इन संगठनों और

पारिवारिक पृष्ठभूमि

कामरेड कोटेश्वरलु का जन्म 26 नवम्बर 1954 को पेद्दापल्ली कस्बे में हुआ था। उनके पिता मल्लोझुला वेंकटय्या एक कांग्रेसवादी थे जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सक्रियता से भाग लेकर तेलंगाना में निज़ाम के खिलाफ किए गए संघर्ष का समर्थन किया था। उनकी मां मधुरम्मा हैं जो अपने पति की राजनीति से प्रभावित प्रगतिशील विचारों वाली महिला हैं। उन्होंने अपने बेटों को काफी मुश्किल से पाल–पोसकर पढ़ाया और साथ ही जनवादी विचारों से बड़ा किया। कामरेड कोटेश्वरलु की हाईस्कूल की पढ़ाई पेद्दापल्ली में ही पूरी हुई थी। अपने पिता से मिले प्रोत्साहन से उन्होंने प्रगतिशील लेखकों की रचनाएं पढ़कर बचपन से ही सामंत–विरोधी विचारों को आत्मसात किया था। बाद में जब कामरेड कोटेश्वरलु क्रांतिकारी क्रियाकलापों में पूरी तरह संलग्न हुए थे, तब उन्हें उनके माता–पिता और अन्य रिश्तेदारों से हर किस्म का नैतिक समर्थन व सहयोग मिलता रहा। आपातकाल को हटाने के बाद मिले खुले अवसरों के दौर में उनका घर एक क्रांतिकारी केन्द्र बना था। उन दिनों कई कामरेड उनके घर में आना–जाना करते थे। वे उन सभी के लिए माता–पिता ही थे। सबको उन्होंने अपने बच्चों की तरह प्यार किया। सहयोग दिया। हालांकि पुलिस ने उस परिवार पर तीव्र दमनचक्र चलाया था और दो बार घर को ढहा भी दिया था, फिर भी वे दुश्मन के दबाव में नहीं आए। इस प्रकार जिले में क्रांतिकारी आंदोलन के निर्माण में उनके परिवार का भी योगदान रहा। कोटेश्वरलु के एक क्रांतिकारी के रूप में उभरने में उनसे जो प्रोत्साहन मिला था, वह काफी महत्वपूर्ण था।

छात्र जीवन से आंदोलन में प्रवेश

कोटेश्वरलु में भी उनके पिता की तरह देशभक्ति के विचार कूट–कूटकर भरे हुए थे। हाईस्कूल की पढ़ाई पूरी होते–होते 1969 में पृथक तेलंगाना राज्य का आंदोलन एक उफान के रूप में सामने आया था जिसने युवाओं को झकझोर दिया। किशोर उम्र के कोटेश्वरलु ने उसमें काफी जुझारू तरीके से भाग लिया। वे पेद्दापल्ली कस्बे में चलाए गए पृथक तेलंगाना आंदोलन के छात्र नेताओं में एक थे।

पढ़ाई में कामरेड कोटेश्वरलु अव्वल रहने वाले छात्र थे। गणित उनका पसंदीदा विषय था। वे एक लोकप्रिय छात्र थे। पेद्दापल्ली में हाईस्कूल की

पढ़ाई पूरी होने के बाद वे उच्च पढ़ाई के लिए जिला मुख्यालय करीमनगर गए थे। वहां पर पीयूसी की पढ़ाई के दौरान उनका क्रांतिकारी राजनीति व साहित्यिक मित्रों से परिचय हो गया। साल–दर–साल क्रांतिकारी राजनीति से उनके सम्बन्ध गहरे होते रहे। पीयूसी में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होने के बाद उन्होंने बी.एससी. (गणित) में दाखिला लेकर उसे 1974 में पूरा किया। बाद में हैदराबाद स्थित उस्मानिया विश्वविद्यालय में उन्होंने वकालत की पढ़ाई में दाखिला लिया।

1973 में ही उन्होंने अपने दोस्तों के साथ मिलकर अपने कालेज में झूठी आजादी की जश्न का बहिष्कार करते हुए तिरंगा झण्डे को जलाया था और वे उस केस में गिरफ्तार भी किए गए थे। 1974 में क्रांतिकारी छात्र संगठन के निर्माण की प्रक्रिया में भागीदार बनकर उन्होंने जिले में मजबूत क्रांतिकारी छात्र संगठन के निर्माण की नींव डाली। छात्र आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए उन्होंने अपनी पढ़ाई को बीच में ही छोड़ दिया ताकि वे पार्टी में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में काम कर सके। 1975 में रैडिकल छात्र संगठन के निर्माण के बाद जिले में छात्र आंदोलन के विस्तार के लिए उन्होंने प्रयास किए। उसके पहले ही निर्मित क्रांतिकारी साहित्यिक व सांस्कृतिक संगठनों के वे सम्पर्क में रहे और मानवाधिकार संगठन के निर्माण–कार्य में भी भागीदार बने थे। आदिलाबाद जिले के क्रांतिकारी आंदोलन के साथ भी उनके सम्बन्ध रहे। एक स्थानीय जन दुश्मन का सफाया करने के मामले में गिरफ्तार किए गए कामरेड्स भूमय्या और किष्टगौड को फांसी की सजा दिए जाने के खिलाफ राज्य भर में चलाए गए आंदोलन में कामरेड कोटेश्वरलु ने भाग लिया। जिले के छात्रों को उस आंदोलन में भागीदार बनाया।

26 जून 1976 को इंदिरा गांधी ने आपातकाल की घोषणा की। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने फासीवादी तौर–तरीकों में देश भर में शासक वर्गीय राजनेताओं समेत हजारों प्रतिद्वंद्वियों को जेल में डाल दिया। पूरे देश को जेल बना डाला। चूंकि हमारी पार्टी नक्सलबाड़ी के समय की वामपंथी दुस्साहसवादी कार्यनीति से बाहर आकर जन आंदोलनों के निर्माण–कार्य में गंभीरता से जुटी हुई थी, इसलिए उस समय के जन संगठनों को आपातकाल में फासीवादी दमन की मार झेलनी पड़ी। आपातकाल के दौर में सभी क्रांतिकारी पार्टियों व संगठनों को भूमिगत होना पड़ा। आपातकाल के अंधेरे शासन में उन्होंने अपने जिले में सिरिसिल्ला तहसील के वेमुलवाड़ा के ग्रामीण इलाके में किसानों के बीच काम

सुविधाओं को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए स्कूलों, अस्पतालों, सुरक्षित पेयजल, जन वितरण प्रणाली आदि व्यवस्थाओं को अपने हाथों में ले लिया। लालगढ़ जन विद्रोह ने सीपीएम के सत्ता–केन्द्र में खलबली मचा दी। लालगढ़ जन संघर्ष के समर्थन में देश भर में आंदोलन खड़ा हो गया। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी समर्थन मिला। लालगढ़ में भ्रूण रूप में जनता का शासन अस्तित्व में आया। लालगढ़ संघर्ष को सही दिशा देने में; जन मुक्ति छापामार सेना, पार्टी, जन संगठनों व जनाधार को मजबूत कर उसे आधार इलाके के लक्ष्य से आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक कार्यनीति तैयार कर लागू करने में; पीएलजीए को सशस्त्र बनाने में तथा छापामारों को गुरिल्ला युद्ध की तकनीक में प्रशिक्षित करने में कामरेड कोटेश्वरलु ने अहम भूमिका निभाई। लालगढ़ आंदोलन को देश के राजनीतिक पटल पर एक नमूने के तौर पर अंकित करने में उनका कार्य सभी क्रांतिकारियों के लिए सीखने योग्य है।

सैद्धांतिक, राजनीतिक, प्रचार व साहित्यिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान

पार्टी के बुनियादी दस्तावेजों को समृद्ध बनाने और नीतिगत दस्तावेजों को तैयार करने में कामरेड कोटेश्वरलु ने प्रमुख भूमिका निभाई। आंध्रप्रदेश व बंगाल में नेतृत्व करते हुए तथा सीसी/पीबी सदस्य की जिम्मेदारी निभाते हुए पार्टी में अंदरूनी सरकुलरों व पत्रों का प्रारूप बनाने में उन्होंने प्रमुख भूमिका निभाई। क्रांति, रैडिकल मार्च, कार्मिक पथम्, प्रभात, पीपुल्सवार, वैनगार्ड, अवामी जंग आदि पत्रिकाओं को तथा बंगाल में कई पत्रिकाओं को चलाने में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। दक्षिणपंथी अवसरवाद और सीपीएम के नव संशोधनवाद के खिलाफ राजनीतिक बहस चलाने में उन्होंने विशेष रूप से काम किया। असिधारा समेत कई छद्म नामों से उन्होंने दर्जनों कविताएं लिखीं। प्रचार के मोर्चे पर उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किए। पूर्वी रीजनल ब्यूरो के प्रवक्ता के रूप में रहकर पोलिटब्यूरो सदस्य के रूप में उन्होंने विभिन्न मौकों पर पार्टी का रुख स्पष्ट करते हुए प्रेस बयान व साक्षात्कार दिए थे।

शुरू से उन्होंने कैडरों के लिए राजनीतिक कक्षाएं चलाकर उन्हें विकसित करने की कोशिश की। 1996 में केन्द्रीय राजनीतिक स्कूल व स्कोप की जिम्मेदारियां लेने के बाद नेतृत्वकारी कैडरों को सैद्धांतिक रूप से शिक्षित करने के लिए विशेष कार्यक्रम की योजना बनाई। चुनिंदा विषयों पर शिक्षकों के साथ मिलकर नोट्स तैयार करने में उन्होंने भाग लिया।

यातनाएं दीं। लेकिन किसानों ने इसका पार्टी की अगुवाई में सशस्त्र प्रतिरोध किया। हमारी पार्टी ने जनता की अगुवाई करते हुए मजबूत संयुक्त मोर्चे का निर्माण करने हेतु प्रयास किया। नंदिग्राम जन संघर्ष के समर्थन में कोलकाता के छात्रों और राज्य के बुद्धिजीवियों समेत देश भर में जनवादियों ने कमर कस ली। सिंगूर व नंदिग्राम के आंदोलनों में जनता की एकजुटता ने बुद्धदेव को टाटा नैनो कार फैक्टरी और सलेम केमिकल हब को वापस लेने पर मजबूर किया। इन जन आंदोलनों को सफलता की दिशा में चलाने के लिए कामरेड कोटेश्वरलु ने दिन–रात काम किया।

शालबोनी में जिंदल के प्रस्तावित स्टील प्लांट के लिए शिलान्यास कर वापस आते समय जिंदल, मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य और केन्द्रीय इस्पात मंत्री रामविलास पासवान के काफिले पर पीएलजीए के गुरिल्लों ने 2 नवम्बर 2008 को बारूदी सुरंग का विस्फोट कर हमला बोल दिया। इस बहाने राजसत्ता लालगढ़ पर टूट पड़ी। पुलिस बलों के अत्याचारों के विरोध में जनता पुलिस अत्याचार विरोधी जन कमेटी (पीसीएपीए) में गोलबंद हुई। गांव–गांव में सैकड़ों लोग संगठित होकर अपनी जायज मांगों को लेकर बड़े पैमाने पर आंदोलन छेड़ दिया। पुलिस को गांवों में आने से रोकने के लिए सड़कों को खोद दिया। हजारों की संख्या में जनता ने जुलूस निकाले। आरंधन (सामूहिक उपवास) जैसे शांतिपूर्ण संघर्ष से लेकर सशस्त्र संघर्ष तक सभी तरीकों में जनता ने संघर्ष किया। इस दरमियान जनता ने सिद्धू–कानू जन मिलिशिया का गठन किया। समूचा जंगलमहल इलाका जुझारू जन आंदोलनों से दहल उठा। दशकों से सत्ता पर काबिज नकली मार्क्सवादियों को इन जन आंदोलनों ने भयभीत कर दिया। इसे दबाने के लिए वे हर्मद बाहिनी जैसे गुण्डा गिरोहों से सशस्त्र हमलों पर उतारू हो गए। राज्य पुलिस, केन्द्रीय अर्धसैनिक बलों और हर्मद बाहिनी ने मिलकर हमले तेज किए। हत्या, अत्याचार, बलात्कार, गांव–दहन व तबाही आदि करतूतों को अंजाम दिया। फिर भी जनता ने बेखौफ होकर इसका मुकाबला किया। पुलिस व अर्धसैनिक बलों के खिलाफ पीएलजीए बलों व सिद्धू–कानू जन मिलिशिया के नेतृत्व में एम्बुशों व रेडों को अंजाम देते हुए गुरिल्ला युद्ध को तेज किया गया। सिल्दा कैम्प पर धावा बोलकर ईस्टरन फ्रंटियर राइफल्स के 24 जवानों का सफाया किया गया जो जनता की ताकत का एक नमूना था। गांवों में अत्याचारों के अड्डे बने सीपीएम के दफ्तरों को जनता ने ध्वस्त किया। दुश्मन के मनोवैज्ञानिक युद्ध के खिलाफ प्रचार युद्ध तेज हुआ। जनता ने अपनी न्यूनतम

करते हुए कृषि क्रांति की प्राथमिक शिक्षा हासिल की। उस समय के पार्टी कार्यकर्ता भूमिगत पार्टी के साथ नियमित सम्बन्ध न होने से सिर्फ क्रांति के कुछ हमदर्दों से चंदे के रूप में मिलने वाले थोड़े से पैसों से रोजमर्रा की जरूरतें और अन्य खर्चे पूरा कर लेते थे। दुश्मन को जरा भी पता न लगे ऐसी सावधानियां बरतते हुए बोल्शेविक संकल्प के साथ क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेते थे। कई दिनों तक कामरेड कोटेश्वरलु ने अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के पास रहते हुए उन्हें क्रांति के समर्थक बनाए। अपने छोटे भाई को क्रांतिकारी आंदोलन में भागीदार बनाने में भी उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही। आपातकाल में जब पुलिस ने गिरायपल्ली फर्जी मुठभेड़ में कामरेड्स सूरपनेनि जनार्दन, सुधाकर, आनंदराव और मुरलीमोहन की हत्या की, तो सभी क्रांतिकारियों को अपनी गतिविधियों को पूरी तरह गोपनीय रखने पर मजबूर होना पड़ा। आपातकाल हटाने के बाद जब क्रांतिकारी क्रियाकलापों को व्यापक बनाने का फैसला लिया गया, तब वे सिरिसिल्ला क्षेत्र में मरिगड्डा गांव के पास पुलिस के हाथों गिरफ्तार कर लिए गए। कुछ महीनों तक वरंगल सेंट्रल जेल में रहने के बाद वे जमानत पर रिहा हो गए।

पार्टी का पुनरनिर्माण –
1977 का तेलंगाना रीजनल अधिवेशन

नक्सलबाड़ी व श्रीकाकुलम की अस्थाई पराजय का तत्कालीन भाकपा (माले) (पीपुल्सवार) धारा की आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी ने 'अतीत का मूल्यांकन करते हुए सशस्त्र संघर्ष को आगे बढ़ाएंगे' के नाम से एक दस्तावेज (एससीआर) तैयार किया। उसमें उस महान क्रांतिकारी उभार के सकारात्मक व नकारात्मक पहलुओं का जायजा लिया गया। उसकी शिक्षा पर निर्भर होकर आंदोलन का पुनरनिर्माण करने के लिए सीमित आत्मगत शक्तियों के साथ ही सैद्धांतिक, राजनीतिक व सांगठनिक कार्य को जारी रखने का निर्णय लिया गया। इसी तरह फिर एक बार क्रांतिकारी उभार निर्मित करने के संकल्प के साथ दक्षिणपंथी अवसरवाद के खिलाफ कड़ा संघर्ष किया गया। एससीआर दस्तावेज ने हमारी वामपंथी दुस्साहसवादी कार्यनीति को बदल दिया। हमारे व्यवहार को सही दिशा दी। फासीवादी शासन के चलते जनता में उठे विरोध और शासक वर्गों में जारी अंतरविरोधों के चलते आपातकाल को हटाना पड़ा जिससे खुले कार्यक्रमों के लिए अनुकूल हालात निर्मित हो गए।

1977 की शुरूआत में नागपुर में पार्टी का तेलंगाना रीजनल अधिवेशन (कांफ्रेन्स) आयोजित किया गया। इस अधिवेशन में 1974–75 में सी.ओ.सी. (केन्द्रीय आर्गनाइजिंग कमेटी) द्वारा बनाए गए 'क्रांति का रास्ता' नामक दस्तावेज को पारित किया गया। कामरेड कोटेश्वरलु ने इसमें प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। बाद की ठोस परिस्थिति के मुताबिक एपी राज्य कमेटी ने 'अगस्त प्रस्ताव' को जारी किया। इसकी रोशनी में जनदिशा पर निर्भर होकर नई कार्यनीति के साथ क्रांतिकारी आंदोलन को विकसित करने की योजना तैयार की गई।

इस योजना पर दृढ़ता से अमल करते हुए जारी रखे गए सशस्त्र कृषि क्रांतिकारी क्रियाकलापों के फलस्वरूप आंध्रप्रदेश के करीमनगर, आदिलाबाद, चित्तूर, अनंतपुर, विशाखा आदि जिलों में तथा उसी समय पुरानी एमसीसी व पार्टी यूनिटी के प्रयासों के फलस्वरूप बिहार के गया, औरंगाबाद, हजारीबाग, गिरिडीह, पलामू, जहानाबाद आदि जिलों में संघर्ष तेज होने लगे जिससे देश में एक बार फिर क्रांतिकारी उभार पैदा हो गई। करीमनगर जिले के नेतृत्वकारी कामरेडों में से एक कामरेड कोटश्वरलु ने क्रांतिकारी क्रियाकलापों का विस्तार करने में प्रमुख भूमिका निभाई।

करीमनगर व आदिलाबाद जिलों में किसान संघर्षों की नई उभार

1978 में रैडिकल छात्र संगठन का दूसरा अधिवेशन आयोजित किया गया था, जबकि 1979 में रैडिकल युवा संगठन और 1981 में आंध्रप्रदेश किसान मजदूर संगठन का निर्माण हुआ था। इसमें कामरेड कोटेश्वरलु ने सक्रिय भूमिका निभाई। राज्य में क्रांतिकारी छात्र संगठन की गतिविधियों में आई तेजी ने युवा संगठन की नींव डाली। छात्र–नौजवानों ने 1978 से 'चलो गांवों की ओर' नाम से एक अभियान अपनाया जिससे ग्रामीण इलाकों में सशस्त्र कृषि क्रांतिकारी क्रियाकलापों को गति मिली। इसी क्रम में मानवाधिकार आंदोलन मजबूत हुआ। इस आंदोलन के फलस्वरूप आपातकाल में गिरायपल्ली में हुई फर्जी मुठभेड़ समेत इस तरह की कई घटनाओं पर जांच के लिए सरकार को भार्गव आयोग का गठन करना पड़ा। उधर पीयूसीएल ने हाईकोर्ट के भूतपूर्व न्यायाधीश तार्कुंडे की अध्यक्षता में एक और कमेटी का गठन किया। फर्जी मुठभेड़ों का सबूत इकट्ठा करने के लिए उस जमाने के

तीसरे इंटरनेशनल के रद्द किए जाने के बाद, कामरेड माओ की मृत्यु के बाद दुनिया में क्रांति का कोई केन्द्र नहीं रह गया। ऐसी परिस्थिति में दुनिया की कुछ सर्वहारा पार्टियों की पहल पर रिम (रिवल्यूशनरी इंटरनेशनलिस्ट मूवमेंट) के साथ सम्बन्ध जारी रखते हुए ही हमारी पार्टी ने दक्षिण एशिया की माओवादी पार्टियों और ग्रुपों के साथ बिरादराना सम्बन्ध कायम कर लिए। 1996 में दिल्ली में राष्ट्रीयता के सवाल पर आयोजित सेमिनार में एमसीसी, पीपुल्सवार और पार्टी यूनिटी ने भाग लिया जहां उन्होंने अपना–अपना रुख स्पष्ट किया। साम्राज्यवाद, भारतीय विस्तारवाद और आंदोलनों पर जारी राजकीय हिंसा के खिलाफ गठित सीकम्पोसा में इन पार्टियों ने सक्रियता से भाग लिया। इन तमाम प्रयासों में कामरेड कोटेश्वरलु ने अहम भूमिका निभाई।

साथ ही, देश के कई लड़ाकू संगठनों के साथ कामरेड कोटेश्वरलु ने दोस्ताना सम्बन्ध कायम किए। असम, नगालैण्ड, मणिपुर आदि क्षेत्रों में अलग होने के अधिकार समेत आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए संघर्षरत राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष के संगठनों से क्रांतिकारी रिश्ते कायम रखते हुए भारत के लुटेरे शासक वर्गों के विस्तारवाद के खिलाफ सांझी समझदारी बढ़ाने में उन्होंने सराहनीय भूमिका निभाई। कश्मीर के संघर्षरत संगठनों के साथ संयुक्त मोर्चा बनाने की दिशा में भी उन्होंने काम किया। दशकों से संशोधनवाद में डूबे हुए तथाकथित कम्युनिस्टों पर भरोसा खो चुके राष्ट्रीय मुक्ति संगठनों के साथ हमारी पार्टी की नीतियों के आधार पर बेहतर सम्बन्ध कायम कर उनके साथ सांझी समझदारी बनाने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

ऐतिहासिक लालगढ़ जन विद्रोह के निर्माण में

साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण की नीतियों के फलस्वरूप देश में बाढ़ की तरह आई विदेशी पूंजी से सैकड़ों विशेष आर्थिक क्षेत्र (सेज) अस्तित्व में आए। इन सेजों ने किसानों से जमीनें छीनकर उनका जीना मुश्किल बना दिया। देश की बहुमूल्य प्राकृतिक सम्पदाओं को मनमाने ढंग से लूटने के लिए सिंगूर में टाटा की नैनो परियोजना, नंदिग्राम में सलेम केमिकल हब, लालगढ़ में जिंदल के स्टील कारखाने के लिए जमीनों के अधिग्रहण की कोशिशों का किसानों ने विरोध किया। उन्होंने 'जान देंगे पर जमीन नहीं' का नारा बुलंद करते हुए संघर्ष का रास्ता अख्तियार किया। नंदिग्राम में किसानों ने बी.यू.पी.सी. का गठन कर जुझारू संघर्ष छेड़ दिया। सरकारी बलों ने किसानों की हत्या, शवों को लापता करना, महिलाओं पर अत्याचार, गिरफ्तारियां, जेल व

क्रांतिकारियों की एकता के प्रयासों में केन्द्रीय कमेटी नेता के रूप में...

नक्सलबाड़ी आंदोलन की अस्थाई पराजय के बाद विभिन्न उत्पीड़ित वर्गों व तबकों में तथा रणनीतिक महत्व के इलाकों में क्रांतिकारी आंदोलन का दोबारा निर्माण करने के दौरान सच्चे क्रांतिकारियों के बीच एकता के प्रयास तेज हो गए। 1990 के दशक में इसके सकारात्मक नतीजे आने लगे। कामरेड कोटेश्वरलु ने भी पुरानी भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) के केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में रणनीति–कार्यनीति, एससीआर–1980 और नीतिगत दस्तावेजों के आधार पर देश के बिरादाराना क्रांतिकारियों और संगठनों के साथ एकता के प्रयासों में भाग लिया। खासकर पुरानी भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) और भाकपा (मा–ले) (पार्टी यूनिटी) के बीच 1998 में सम्पन्न विलय में उन्होंने प्रमुख भूमिका निभाई। भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) की 2001 में आयोजित कांग्रेस में सैद्धांतिक, राजनीतिक, सैनिक, सांगठनिक व कार्यनीतिगत पहलुओं में की गई समीक्षा के चलते मा–ले की धारा से तथा तब तक एमसीसीआई द्वारा हासिल नतीजों से उस धारा से एकता के लिए आवश्यक आधार निर्मित हो गया। 21 सितम्बर 2004 को इन दोनों धाराओं के बीच सम्पन्न विलय और एक महाधारा के रूप में भाकपा (माओवादी) के आविर्भाव की प्रक्रिया में कामरेड कोटेश्वरलु ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दो पार्टियों के बीच कई दफे हुई द्विपक्षीय वार्ता की बैठकों में कामरेड कोटेश्वरलु ने भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) के प्रतिनिधिमण्डल के सदस्य के रूप में भाग लिया। इस मौके पर दस्तावेजों के आदान–प्रदान में, अध्ययन में, संयम के साथ बहसें चलाने में तथा दो पार्टियों के व्यवहार से सकारात्मक पहलुओं का संश्लेषण कर उसका निचोड़ एकीकृत पार्टी के नए दस्तावेजों में सम्मिलित करने में कामरेड कोटेश्वरलु का योगदान महत्वपूर्ण रहा। भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों की एकता के अध्याय में कामरेड कोटेश्वरलु का नाम प्रमुख रूप से अंकित होगा।

बिरादराना सम्बन्धों की प्रगति में

भारत के विभिन्न इलाकों में बढ़ रहे क्रांतिकारी आंदोलन और नेपाल में तेजी से उभरे जनयुद्ध के आधार पर दक्षिण एशिया में एक क्रांतिकारी समन्वय केन्द्र का गठन करने की दिशा में पार्टी ने पहलकदमी के साथ काम किया।

छात्र नेताओं ने प्रयास किए थे। खुले क्रियाकलापों के लिए मिले अनुकूल अवसरों का फायदा उठाकर पार्टी ने सभी मोर्चों में क्रांतिकारी क्रियाकलापों को तेज किया। किसान आंदोलन के लिए करीमनगर व अदिलाबाद जिले केन्द्र बिंदु बन गए। इन आंदोलनों से कामरेड कोटेश्वरलु को एक नेता के रूप में उभरने का अवसर मिला।

करीमनगर जिला तेलंगाना इलाके के पिछड़े व भारी सामंती उत्पीड़न से पीड़ित जिलों में से एक था। 1977 में करीमनगर जिले के जगित्याल, कोरुट्ला, मेटपल्ली, सिरिसिल्ला आदि इलाकों में क्रांतिकारी आंदोलन विकसित होने के फलस्वरूप किसान समुदाय एक तूफान की तरह उठ खड़ा हुआ था। सदियों से चल रहे सामंती शोषण व उत्पीड़न को किसानों ने चुनौती दी। 9 सितम्बर 1978 को जगित्याल कस्बे में हजारों किसानों की एक भारी आमसभा हुई थी। वह क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में 'जगित्याल जैत्रयात्रा' (जगित्याल विजयी यात्रा) के नाम से मशहूर हुई। इस आंदोलन के चलते सैकड़ों गांवों में कट्टर भूस्वामियों के घमण्ड पर करारी चोट करते हुए उनका 'हुक्का–पानी बंद' करवा दिया। सदियों से चली आ रही सामंतशाही को इस संघर्ष ने हिलाकर रख दिया। जमींदारों द्वारा किसानों को लूटकर अवैध तरीके से इकट्ठे किए गए जायदाद का हिसाब लगाकर फिर से किसानों को लौटाने की शर्त रखी गई। किसानों से छीनी गई जमीनें वापस देने और गांव की साझी जमीनों को चिन्हित कर उन्हें भूमिहीन व गरीब किसानों को देने के फैसले सुनाए गए। क्रांतिकारी किसानों की इस उभार से घबराए हुए सामंती वर्ग ने सरकार पर दबाव डालकर जगित्याल व सिरिसिल्ला तहसीलों को अशांत क्षेत्र घोषित करवा लिया। किसान समुदायों पर राजसत्ता ने कहर बरपाया। सामंतवाद की रक्षा के लिए गांवों में पुलिस कैम्प लगाए गए। पुलिस बलों ने किसानों को बड़े पैमाने पर गिरफ्तार कर जेल भेजना शुरू किया। जमींदारों ने अपने गुण्डों के जरिए लक्ष्मीराजम, पोशेट्टी जैसे किसान कार्यकर्ताओं की हत्या करवाई। इस परिस्थिति में पार्टी ने सामंतवाद–विरोधी संघर्ष को राजसत्ता–विरोधी संघर्ष के रूप में बदलने का एक उन्नत कार्यभार अपनाया।

करीमनगर व आदिलाबाद जिलों में उमड़े किसान आंदोलन की बदौलत पार्टी मजबूत होने लगी। अगस्त 1977 में एससीआर की रोशनी में एपी राज्य कमेटी द्वारा नई कार्यनीति तय करने के बाद 1978 में पहली बार करीमनगर–आदिलाबाद जिलों की संयुक्त पार्टी कमेटी का गठन किया गया

था। इस कमेटी के सचिव के रूप कामरेड कोटन्ना को चुन लिया गया। 1979 की शुरूआत में आयोजित पार्टी के जिला अधिवेशन में दोनों जिलों के लिए अलग–अलग पार्टी कमेटियों को चुन लिया गया। करीमनगर जिला कमेटी के सचिव की जिम्मेदारी कामरेड कोटन्ना ने उठाई।

क्रांतिकारी आंदोलन जल्द ही विभिन्न मोर्चों में विस्तार करने लगा और इस दौरान राज्य स्तर का नेतृत्व व विभिन्न आंदोलनों की अगुवाई करते हुए जिला स्तर का नेतृत्व नए अनुभवों से लैस होने लगा। आंध्रप्रदेश का आंदोलन और तमिलनाडु में धर्मपुरी क्षेत्र में किसान आंदोलन को आधार बनाकर आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी और तमिलनाडु राज्य कमेटी ने मिलकर 22 अप्रैल 1980 में भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) का निर्माण किया। सितम्बर 1980 में आंध्रप्रदेश राज्य का 12वां पार्टी अधिवेशन सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में नक्सलबाड़ी की उभार व अस्थाई पराजय पर एपी राज्य कमेटी द्वारा तैयार एससीआर दस्तावेज और उसके द्वारा अपनाई गई कार्यनीति पर चर्चा की गई। पिछले व्यवहार की समीक्षा करके अनुभवों का संश्लेषण किया गया। इस अधिवेशन में आंध्रप्रदेश आंदोलन को, खासकर करीमनगर व आदिलाबाद जिलों में बढ़ रहे किसान आंदोलन को नई बुलंदियों पर विकसित करने के लिए आवश्यक कार्यनीतियां तय की गईं। इसमें इलाकावार राजसत्ता पर कब्जा करने की दीर्घकालीन जनयुद्ध की लाईन के अनुसार जनसेना का निर्माण, आधार इलाकों के लक्ष्य से दण्डकारण्य में दस्तों को भेजना, उत्तर तेलंगाना को गुरिल्ला जोन में विकसित करने के लक्ष्य के अंतर्गत सभी पांच जिलों में क्रांतिकारी आंदोलन का विस्तार तथा सच्ची क्रांतिकारी शक्तियों के बीच एकता को महत्व देना आदि प्रमुख थीं। 'करीमनगर–आदिलाबाद जिलों के किसान आंदोलन को उच्च स्तर में विकसित करो' के नाम से पार्टी द्वारा जारी दस्तावेज (जो गुरिल्ला जोन दस्तावेज के रूप में लोकप्रिय हुआ था) में इन कार्यनीतियों का सविस्तार से जिक्र किया गया। कामरेड कोटेश्वरलु ने इस अधिवेशन में प्रतिनिधि के रूप में सक्रिय रूप से भाग लिया। अधिवेशन ने उन्हें राज्य कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया। तीन माह बाद हुई राज्य कमेटी की बैठक में उन्हें राज्य कमेटी का सचिव चुन लिया गया। तब से वे 'प्रह्लाद' के नाम से पार्टी कतारों में लोकप्रिय हुए थे। अक्टूबर 1984 तक वे राज्य कमेटी सचिव के रूप में और 1986 के आखिर तक राज्य कमेटी सदस्य के रूप में उन्होंने काम किया। 1984 के आखिर में उन्होंने पार्टी में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में काम करने वाली एक साथी के साथ विवाह कर लिया।

2007 – ऐतिहासिक एकता कांग्रेस – 9वीं कांग्रेस

देश के उल्लेखनीय इलाकों में क्रांतिकारी आंदोलन के निर्माण में लगी हुई दो पार्टियों, जिनका अच्छा–खासा जनाधार रहा, के विलय के फलस्वरूप भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) का आविर्भाव होने से देश की नई जनवादी क्रांति की गति ही बदल गई। जनवरी 2007 में हमारी नई पार्टी भाकपा (माओवादी) की एकता कांग्रेस – 9वीं कांग्रेस बेहद उत्साहपूर्ण माहौल में सम्पन्न हुई।

इस कांग्रेस ने चार दशकों के अपार अनुभव के आधार पर पार्टी के बुनियादी दस्तावेजों, नीतियों और पीओआर को समृद्ध बनाया। इस कांग्रेस के जरिए पार्टी, जनसेना और संयुक्त मोर्चे के प्रति पार्टी की समझदारी पहले से बेहतर हुई। केन्द्रीय, प्रधान व फौरी कार्यभार के प्रति स्पष्टता देते हुए इस कांग्रेस ने आधार इलाकों के निर्माण के लिए गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध में तथा पीएलजीए को पीएलए में विकसित करने का आह्वान किया। विध्वंस व निर्माण के पहलू पर भी इस कांग्रेस ने स्पष्ट समझदारी दी ताकि जनता की वैकल्पिक राजसत्ता को विकसित किया जा सके और गुरिल्ला क्षेत्रों के अंदर गुरिल्ला आधर–क्षेत्रों के निर्माण की प्रक्रिया को तेज किया जा सके। गैर–सर्वहारा रुझानों के खिलाफ भूल–सुधार अभियान की योजना तैयार की ताकि पार्टी का बेल्शेविकीकरण किया जा सके। देश भर में दुश्मन द्वारा अपनाए गए दमन–उन्मूलन आक्रमण को हराने के लिए कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियानों, व्यापक राजनीतिक जन आंदोलनों और जन प्रतिरोधी आंदोलनों के निर्माण का आह्वान किया। कांग्रेस ने दुश्मन द्वारा अमल षड़यंत्रपूर्ण एलआईसी रणनीति का पर्दाफाश किया और जनाधार पर आधारित होकर उसे माओवादी जनयुद्ध के जरिए हराने हेतु स्पष्टता दी। सांझे दुश्मन के खिलाफ राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों से एकजुटता कायम करने का निर्णय लिया गया। दुनिया भर में मौजूद क्रांतिकारी पार्टियों व शक्तियों के साथ सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयवाद से मार्गदर्शक नियम तैयार किए ताकि उनके प्रति सैद्धांतिक रूप से सही समझदारी बना ली जा सके। इस कांग्रेस की तैयारियों, उसके आयोजन और बहसों में कामरेड कोटेश्वरलु ने सक्रिय भूमिका निभाई। इस कांग्रेस में उन्हें फिर एक बार केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया। केन्द्रीय कमेटी में उन्हें पोलिटब्यूरो सदस्य व पूर्वी रीजनल ब्यूरो सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया और बंगाल के प्रभारी के रूप में जिम्मेदारी दी गई।

भूमिका निभाने आदि सफलताओं के साथ यह कांग्रेस सम्पन्न हुई। इसमें कामरेड कोटेश्वरलु ने केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में प्रमुख भूमिका निभाई। इस कांग्रेस में सामने आई वामपंथी दुस्साहसवादी रुझानों का विरोध कर पार्टी लाइन को ऊंचा उठाए रखा गया। इस कांग्रेस ने कामरेड कोटेश्वरलु को केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया। केन्द्रीय कमेटी ने उन्हें पोलिटब्यूरो सदस्य व उत्तर रीजिनल ब्यूरो सचिव के रूप में नियुक्त किया।

उत्तर रीजनल ब्यूरो के सचिव के रूप में

उत्तर रीजनल ब्यूरो के सचिव के रूप में कामरेड कोटेश्वरलु ने बिहार–झारखण्ड के आंदोलन के विकास के लिए ठोस रूप से कई सुझाव देकर उसे आगे बढ़ाने हेतु काफी प्रयास किया। पुरानी पीपुल्सवार की 9वीं कांग्रेस के आकलन के आधार पर पार्टी व सेना का निर्माण, कोयल–कैमूर गुरिल्ला जोन जोकि रणनीतिक क्षेत्र है, को विकसित करना, मैदानी क्षेत्र मगध में गुरिल्ला युद्ध को बढ़ाना, गुरिल्ला बेस के परिप्रेक्ष्य में काम करना, नई जनवादी सत्ता के अंगों का निर्माण, सामंतवाद–विरोधी संघर्ष व निजी सेनाओं के खिलाफ संघर्ष तेज करना, भूल सुधार अभियान, कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान को योजनाबद्ध तरीके से संचालित करना, पार्टी नेतृत्व व कतारों को इस दिशा में मार्गदर्शन देना आदि में कामरेड कोटेश्वरलु का उल्लेखनीय योगदान रहा।

दिल्ली में छात्र–बुद्धिजीवियों व मजदूर क्षेत्र में आंदोलनों का निर्माण करने के लिए कामरेड कोटेश्वरलु ने खासा प्रयास किया। जब देश में शासक वर्गों द्वारा अपनाई गई नई अर्थिक नीतियों के चलते देश भर में किसानों की समस्याएं बढ़ने लगीं और कृषि क्षेत्र में संकट गहरा गया, तब किसानों का साझा मोर्चा बनाने में उन्होंने पहलकदमी ली। नीचे से पार्टी संगठन को मजबूत बनाते हुए जिला कमेटियों के निर्माण का प्रयास किया। हरियाणा के ग्रामीण अंचल में जड़ें जमाए हुए कट्टर सामंतवाद के खिलाफ दलितों को वर्ग संघर्ष में गोलबंद करने पर वहां के पार्टी नेतृत्व को दिशा दी। हरियाणा में छात्र, महिला व सांस्कृतिक आंदोलनों को विकसित करने पर उन्होंने जोर दिया। पंजाब में छात्रों व नौजवानों में काम करने तथा ग्रामीण इलाकों में पार्टी का प्रचार कार्य चलाते हुए आंदोलन को संगठित करने का मार्गदर्शन उन्होंने दिया था। विभिन्न राज्यों में बिखरी हुई पार्टी की शक्तियों को सांगठनिक ढांचों में संगठित करने के लिए उन्होंने प्रयास किया।

आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी सचिव के रूप में योगदान

दुश्मन की तमाम दमनकारी कार्रवाइयों को धता बताते हुए आंध्रप्रदेश व दण्डकारण्य में पार्टी के नेतृत्व में क्रांतिकारी आंदोलन मजबूत होने लगा। 1981 में सिंगरेणी कोयला खदानों के मजदूरों ने अभूतपूर्व तरीके से 56 दिनों तक बेमियादी हड़ताल की जिसके फलस्वरूप सिंगरेणी कार्मिक संघ (सि.का.स.) के निर्माण की नींव पड़ी। अखिल भारतीय स्तर पर एआईआरएसएफ, एआईएलआरसी आदि छात्र व सांस्कृतिक संगठन अस्तित्व में आए। दूसरी ओर पार्टी के भीतर अवसरवाद के खिलाफ उठे आंतरिक संघर्ष में विघटनकारियों को अलग–थलग कर सही राजनीतिक लाइन की हिफाजत करने में पार्टी के कतार एकजुटता से खड़े हो गए। पार्टी को दोबारा संगठित करने में प्रमुख भूमिका निभाने वाले तत्कालीन नेता के.एस. को एक विशेष गुरिल्ला दस्ते ने एक साहसिक कारनामे के साथ दुश्मन की कैद से छुड़ा लाया। पार्टी में पनपी छह बुराइयों के खिलाफ राज्य कमेटी के द्वारा भूलसुधार अभियान चलाया गया।

1985 की शुरूआत से केन्द्र व राज्य सरकारों ने क्रांतिकारी आंदोलन के खिलाफ अघोषित रूप से फासीवादी युद्ध छेड़ दिया जिसे हराने के लिए राज्य कमेटी ने आत्मरक्षात्मक युद्ध की कार्यनीति तैयार की। राज्य भर में दुश्मन द्वारा चलाए जा रहे तीव्र दमनचक्र का मुकाबला करते हुए ही साम्राज्यवाद–विरोधी व सरकार–विरोधी जन आंदोलन सामने आए। जनता के बीच जन संगठनों के कामकाज तथा आंदोलनों में संयुक्त मोर्चे के क्रियाकलाप बढ़ गए। आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी द्वारा गठित ए.पी.सी. (आंदोलन व प्रचार कमेटी) के नेतृत्व में पार्टी व जन संगठनों की पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन व प्रचार का काम बड़े पैमाने पर चलता रहा। छात्र–बुद्धिजीवियों और मजदूरों के मोर्चे में पार्टी ने सही कार्यनीति के साथ सृजनात्मक ढंग से काम किया। दुश्मन के दमनचक्र के खिलाफ जन प्रतिरोधी कार्रवाइयां पूरे राज्य में बड़े पैमाने पर चलती रहीं। दुश्मन के हमले को परास्त कर पार्टी व आंदोलन का बचाव करने के फलस्वरूप क्रांतिकारी आंदोलन एक कदम और आगे बढ़ा। आंध्रप्रदेश से, खासकर उत्तर तेलंगाना से पार्टी ने कैडरों को योजनाबद्ध ढंग से दण्डकारण्य भेज दिया। दमन के बीचोंबीच ही पुरानी पीपुल्सवार पार्टी और उसके नेतृत्व में विकसित हो रहे आंदोलन ने देश की सच्ची क्रांतिकारी शक्तियों और क्रांतिकारी जनता पर खासा असर डाला। इस पूरे क्रम में एपी राज्य कमेटी के सचिव के रूप में कामरेड प्रह्लाद की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

दण्डकारण्य जनयुद्ध के सेनानी के रूप में

1985 की शुरूआत तक दण्डकारण्य में – पश्चिम में आदिलाबाद से लेकर महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, ओड़िशा के सीमावर्ती इलाकों से होते हुए पूर्व में विशाखा एजेंसी तक फैले हुए व्यापक वन क्षेत्र में क्रांतिकारी आंदोलन, पार्टी व गुरिल्ला ताकतें और वर्ग संघर्ष के विस्तार व विकास के मद्देनजर अलग से नेतृत्वकारी संस्था के निर्माण की जरूरत सामने आई। पर उस समय दुश्मन के अघोषित युद्ध का मुकाबला करते हुए और पार्टी में उत्पन्न आंतरिक संघर्ष को सही दिशा में चलाते हुए दण्डकारण्य में नेतृत्वकारी संस्था को संगठित करने में दो साल और लग गए। 1986 के आखिर में आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी में सदस्यों की संख्या को घटाकर कमेटी को छोटा कर दिया गया। और कुछ नेतृत्वकारी शक्तियों को दण्डकारण्य भेजने का निर्णय एपी राज्य कमेटी ने ले लिया। उसके तहत कामरेड प्रह्लाद 'रामजी' बनकर दण्डकारण्य चले गए जहां उन्होंने आंदोलन का प्रत्यक्ष नेतृत्व किया जो तब तक एपी राज्य कमेटी सचिव व सचिवालय सदस्य के रूप में दण्डकारण्य आंदोलन का मार्गदर्शन कर रहे थे।

फरवरी 1987 में आयोजित पार्टी के प्रथम दण्डकारण्य अधिवेशन में फारेस्ट कमेटी (एफ.सी.) का चुनाव किया गया जिसमें कामरेड रामजी को सदस्य के रूप में चुन लिया गया। आंध्रप्रदेश में हासिल अनुभव को उन्होंने दण्डकारण्य में लागू करते हुए आंदोलन का विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दण्डकारण्य में गढ़चिरोली डिवीजन पर विशेष रूप से ध्यान देते हुए उन्होंने आंदोलन का नेतृत्व किया। आंदोलन की जरूरतों के मद्देनजर वे कुछ समय तक पूर्व डिवीजन में भी रहे थे। 1987 से 1993 तक उन्होंने एफसी सदस्य के रूप में दण्डकारण्य आंदोलन का नेतृत्व किया। पार्टी कैडरों, गुरिल्ला सैनिकों, कमाण्डरों और जनता का विश्वास हासिल किया। इस दौरान दण्डकारण्य में आंदोलन संगठित व विस्तृत हुआ था। जनाधार बढ़ा था और वर्ग संघर्ष भी तीखा हो गया। आत्मगत शक्तियों का विकास हुआ। दुश्मन का प्रतिरोध करते हुए ही गुरिल्ला युद्ध का संचालन करने के लिए आवश्यक राजनीतिक, सैनिक और सांगठनिक तैयारियां पूरी कर ली गईं। गुरिल्ला युद्ध को विकसित किया गया। सात साल तक दण्डकारण्य आंदोलन में प्रत्यक्ष भागीदार बनकर उसे विकसित करने में कामरेड रामजी ने अहम भूमिका निभाई।

इस अधिवेशन के बाद केन्द्रीय कमेटी की अगुवाई में अखिल भारतीय परस्पेक्टिव के साथ संयुक्त मोर्चे का काम आगे बढ़ा। विभिन्न देशों में माओवादी पार्टियों के साथ सम्बन्ध बढ़े। उत्तर तेलंगाना, उत्तर आंध्र–ओड़िशा बॉर्डर व दण्डकारण्य के इलाकों में कृषि क्रांतिकारी गुरिल्ला युद्ध को विकसित करने के लिए योजनाबद्ध काम किया गया। आंध्रप्रदेश में दक्षिण तेलंगाना, दक्षिण तटवर्ती क्षेत्र, रायलसीमा, उत्तर आंध्र–ओड़िशा बॉर्डर (पूर्व) रीजियनों में क्रांतिकारी आंदोलन के विकास के लिए ठोस परस्पेक्टिव तैयार किया गया। पार्टी के संगठितकरण, पार्टी की नेतृत्वकारी शक्तियों व कमाण्डरों के राजनीतिक व सैनिक शिक्षण के लिए योजनाबद्ध तरीके से काम किया गया। पत्र–पत्रिकाओं और प्रचार के क्षेत्रों को पर्याप्त महत्व देने से इस मोर्चे में बेहतर ढंग से काम चला। इन सभी में कामरेड कोटेश्वरलु ने प्रमुख भूमिका निभाई।

पुरानी भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) की नौवीं कांग्रेस – 2001

पुरानी भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) और भाकपा (मा–ले) (पार्टी यूनिटी) के एकजुट होने के बाद एकीकृत भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) ने 2001 में अपनी नौवीं कांग्रेस सफलतापूर्वक आयोजित की। भाकपा (मा–ले) की क्रांतिकारी धारा के विभिन्न ग्रुपों, व्यक्तियों और शक्तियों को एकजुट कर, इस धारा की अगुवाई में चल रहे भारत के क्रांतिकारी आंदोलन का जायज़ा लेकर ली गई शिक्षा के अधार पर पार्टी के बुनियादी दस्तावेजों को समृद्ध बनाया गया। साथ ही, पार्टी की विभिन्न नीतियों को समृद्ध बनाते हुए विभिन्न आंदोलनों की ठोस स्थिति को ध्यान में रखते हुए आवश्यक कार्यनीति तैयार की गई। आधार इलाकों की स्थापना के लक्ष्य से ठोस हालात के मुताबिक जन गुरिल्ला सेना को संगठित कर गुरिल्ला युद्ध की कार्यनीति विकसित कर ली गई। आंदोलन के विकासक्रम में उभर चुकी नेतृत्वकारी शक्तियों को लेकर केन्द्रीय व राज्य कमेटियों का चुनाव किया गया। देश में एक और प्रमुख माओवादी क्रांतिकारी धारा के रूप में काम कर रहे एमसीसी के साथ चल रही झड़पों को समाप्त कर एकता हासिल करने के लिए आवश्यक सैद्धांतिक व राजनीतिक आधार तैयार किया गया। वर्ग संघर्ष को तेज करने, पार्टी का विस्तार करने, देश की उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं व विभिन्न जनवादी आंदोलनों के साथ एकजुटता कायम करने तथा विभिन्न देशों की माओवादी पार्टियों के साथ सम्बन्ध मजबूत कर लेते हुए अंतर्राष्ट्रीय माओवादी आंदोलन में सुचारू

पश्चिम बंगाल में पार्टी का पुनरनिर्माण करने, पार्टी में सच्ची क्रांतिकारी शक्तियों को एकजुट करने और पार्टी को मजबूत करने में कामरेड कोटेश्वरलु ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। कोलकाता में छात्र, युवा व मजदूरों को संगठित कर उसे एक क्रांतिकारी केन्द्र में तब्दील करने का प्रयास किया। कोलकाता में विभिन्न तबकों के अंदर जाकर जन समस्याओं पर जुझारू आंदोलन चलाने हेतु उन्होंने स्थानीय पार्टी नेतृत्व को दिशा दी। बंगाल–झारखण्ड–ओड़िशा (बीजेओ) सीमांत क्षेत्र को एक परस्पेक्टिव जोन के रूप में चयन कर आधार इलाके के लक्ष्य से वहां पर गुरिल्ला युद्ध को बढ़ाकर गुरिल्ला जोन के रूप में विकसित करने में उनकी प्रमुख भूमिका रही। उन्होंने क्रांतिकारी आंदोलन के प्रति बंगाल के बुद्धिजीवियों और जनवादियों का समर्थन जुटाया। इन सबके फलस्वरूप ही सिंगूर और नंदिग्राम में जन आंदोलन सामने आए थे और ऐतिहासिक लालगढ़ जन विद्रोह नक्सलबाड़ी की विरासत में एक क्रांतिकारी जन उभार के रूप में सामने आया।

पुरानी भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) का अखिल भारतीय विशेष अधिवेशन – 1995

1995 में पुरानी भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) का अखिल भारतीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ। मई 1970 में आयोजित भाकपा (मा–ले) की आठवीं कांग्रेस के बाद अत्युन्नत व व्यापक स्तर का पार्टी अधिवेशन आयोजित करने का यह पहला मौका था। इस अधिवेशन ने 1980–1995 के बीच पार्टी के व्यवहार पर गहराई से समीक्षा कर आगे बढ़ने का रास्ता सुगम बनाया। इस अधिवेशन की तैयारियों, दस्तावेजों का प्रारूप तैयार करने और अन्य प्रमुख आह्वानों की समीक्षा कर उन्हें अंतिम रूप देने में कामरेड कोटेश्वरलु ने स्टीरिंग कमेटी सदस्य के रूप में अपना सक्रिय व रचनात्मक योगदान दिया। इस अधिवेशन ने पार्टी के बुनियादी दस्तावेजों को समृद्ध बनाया। आंध्रप्रदेश व दण्डकारण्य के आंदोलनों, जो विकसित हो चुके थे, और तमिलनाडु, कर्नाटका, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, दिल्ली, हरियाणा राज्यों के आंदोलनों, जो प्राथमिक स्तर पर थे, की समीक्षा कर आवश्यक शिक्षा ग्रहण की गई। उत्तर तेलंगाना व दण्डकारण्य में आधार इलाकों की स्थापना के लक्ष्य से काम करने का फैसला लिया गया और जरूरी कार्यभार तय किए गए। इस पूरी प्रक्रिया में कामरेड कोटेश्वरलु ने प्रमुख भूमिका निभाई। इस अधिवेशन ने कामरेड कोटेश्वरलु को केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया।

दण्डकारण्य में उन्होंने एक आदर्शपूर्ण गुरिल्ला सैनिक की तरह काम किया। एक गुरिल्ला योद्धा, कमाण्डर व पार्टी नेता के रूप में उन्होंने आंदोलन के विकासक्रम में अहम भूमिका निभाई। शहरी इलाकों व जन संगठनों के कामकाज में संगठकों की पद्धति लागू करने में, क्रांतिकारी महिला संगठनों का निर्माण करने में, विभिन्न मोर्चों में महिलाओं को प्रोत्साहित करते हुए उन्हें साहसिक कमाण्डरों व सक्षम पार्टी नेताओं के रूप में उभारने में, पितृसत्ता के खिलाफ संघर्ष चलाने में, शहरी व जंगल क्षेत्र के आंदोलनों का तालमेल करने में तथा हथगोलों व हथियारों की तैयारी में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण थी। वे एक सैन्य विशेषज्ञ थे जिन्होंने गुरिल्ला युद्ध में प्रशिक्षण के महत्व पर शुरू से जोर दिया। 1981 से आखिर तक उन्होंने कई सैन्य प्रशिक्षण शिविरों में छात्र व प्रशिक्षक के रूप में भाग लिया। 1987 और 1989 में पार्टी द्वारा आयोजित सैन्य प्रशिक्षण शिविर गुरिल्ला युद्ध के विकास में मील के पत्थर थे। इन शिविरों में अपेक्षाकृत बेहतर प्रशिक्षण मिला। इन शिविरों में गुरिल्ला सैनिकों को आवश्यक सैन्य तकनीक का परिचय मिला। कामरेड रामजी ने इन प्रशिक्षण शिविरों में छात्र के रूप में भाग लेकर मार्क्समैनशिप हासिल की। वे एक अचूक निशानेबाज थे। जन सेना के अनुशासन का वे खुद कड़ाई से पालन करते थे और सभी को ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करते थे। वे एक आदर्शवान कमाण्डर थे। फारेस्ट कमेटी द्वारा तैयार की गई स्टैंडिंग आर्डर्स की रूपरेखा बनाने में वे प्रमुख थे। गुरिल्ला दस्तों को प्लाटूनों व कम्पनियों में संगठित करने व विस्तारित करने में एफसीएम व सीसीएम के रूप में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। पीएलजीए के निर्माण में भी उनकी भूमिका अहम थी। विभिन्न किस्म के हथियारों का प्रयोग करने में वे माहिर थे। एंगेल्स द्वारा लिखित राइफल के इतिहास से लेकर शेर जंग जैसे विशेषज्ञों द्वारा लिखित सैन्य मैनुअलों और हथियारों के इतिहास तक उन्होंने कई मिलिटरी किताबों का अध्ययन किया। उनकी हत्या करने के इरादे से दुश्मन ने कई बार हमले किए थे। लेकिन वे जनता की मदद से सूझबूझ के साथ उनसे बचते रहे।

आंतरिक संघर्षों के दौरान पार्टी लाइन की रक्षा करने में

1985 में तत्कालीन भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) की आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी में उत्पन्न छह बुराइयों (गैर–सर्वहारा रुझानों) के खिलाफ भूलसुधार अभियान चलाया गया था। इसकी धारावाहिकता में 1985 में पुरानी पीपुल्सवार

पार्टी में पहला आंतरिक संघर्ष चला था। केन्द्रीय कमेटी के सत्यमूर्ति, वीरास्वामी आदि ने पार्टी में संकट जैसी स्थिति पैदा की थी। उस समय आंध्रप्रदेश व दण्डकारण्य में पार्टी कतारों को पार्टी की लाइन पर दृढ़ता व एकजुटता से बनाए रखने में एपी राज्य कमेटी सचिव व सदस्य के रूप में कामरेड प्रह्लाद ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पार्टी के प्लेनमों में विघटनकारियों और अवसरवादियों को अलग–थलग कर उनकी साजिशों को परास्त कर पार्टी की रक्षा करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

1991 में पुरानी पीपुल्सवार पार्टी में दूसरी बार आंतरिक संघर्ष सामने आया था। पार्टी के तत्कालीन सचिव के.एस. खुद ही पार्टी में इस संकट के लिए जिम्मेदार बने थे। उस मौके पर के.एस., बंडैया, प्रसाद आदि अवसरवादियों और पदलोलुपों की विघटनकारी राजनीति का कामरेड रामजी ने सुचारू रूप से मुकाबला किया।

इस तरह पार्टी में अवसरवादी विघटनकारी गुटों के खिलाफ चलाए गए आंतरिक संघर्षों में नई नेतृत्वकारी टीम के सदस्य के रूप में कामरेड रामजी ने प्रमुख भूमिका निभाई।

केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में खासा योगदान

कामरेड रामजी को 1993 में केन्द्रीय सांगठनिक कमेटी (सी.ओ.सी.) के सदस्य के रूप में सहयोजित किया गया था। 1995 में अखिल भारतीय विशेष अधिवेशन में उन्हें केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया। केन्द्रीय स्तर पर उन्होंने बिमल, किशनजी आदि नामों से काम किया। अवसरवादियों को पार्टी से निकाल देने के बाद नया नेतृत्व सामने आया जिसका एक सदस्य कामरेड रामजी थे। इस नई टीम ने देश भर में क्रांतिकारी आंदोलन के विस्तार की योजना बनाई। इस योजना को लागू करने में कामरेड रामजी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। उस समय तक पीपुल्सवार पार्टी प्रमुख रूप से दक्षिण भारत तक ही सीमित हुआ करती थी। साथ ही, केन्द्रीय कमेटी ने सच्चे क्रांतिकारियों के साथ एकता को एक प्रमुख व फौरी कार्यभार के रूप में स्वीकार किया।

उस परिस्थिति में केन्द्रीय कमेटी ने कामरेड कोटेश्वरलु को आंदोलन के विस्तार की जिम्मेदारी देकर पश्चिम बंगाल भेजने का निर्णय लिया। वे तबसे लेकर आखिर तक 18 सालों की लम्बी अवधि तक उन्होंने बंगाल की

क्रांतिकारी जनता व कामरेडों के बीच रहकर, बंग्ला भाषा को सीखकर, बंगाल की सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक परिस्थिति को समझकर आंदोलन का निर्माण करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उस आंदोलन का नेतृत्व करते हुए वहीं पर अंतिम सांस ली। बंगाल पर विशेष रूप से ध्यान देते हुए ही उन्होंने उत्तर भारत के विभिन्न राज्यों में पार्टी के विस्तार की कोशिश की।

बंगाल में आंदोलन के पुनरनिर्माण में योगदान

नक्सलबाड़ी की अस्थाई पराजय के बाद हालांकि मा–ले धारा से जुड़े कई गुटों ने आंदोलन के पुनरनिर्माण की कोशिशें कीं, लेकिन अपनी गलत कार्यनीतिक लाइनों और अपने वाम व दक्षिणपंथी भटकावों के चलते वे कोई उल्लेखनीय नतीजे हासिल नहीं कर सके। ऐसे हालात में कामरेड कोटेश्वरलु ने बंगाल में दशकों से जड़ें जमाए सीपीएम के नव संशोधनवाद और सामाजिक फासीवाद के खिलाफ तीखा और जोरदार सैद्धांतिक संघर्ष चलाया। क्रांतिकारी खेमे से जुड़े पुराने दोस्तों से उन्होंने परिचय स्थापित कर लिया। दक्षिणपंथी अवसरवादियों के खिलाफ तीखी राजनीतिक बहसें चलाते हुए उन लोगों को बेनकाब किया जो विशुद्ध बहसबाजी तक सीमित होकर क्रांति को नुकसान पहुंचा रहे थे। पार्टी लाइन व अनुभवों को बंगाल की ठोस परिस्थिति में सृजनात्मक रूप से लागू करने के लिए उन्होंने दिन–रात परिश्रम किया। एक तरफ सामाजिक फासीवादियों के सैद्धांतिक व भौतिक हमले, दूसरी ओर प्रतिक्रियावादी शक्तियों के हमले और क्रांतिकारी पार्टियों के नाम से दशकों से चली आ रही दक्षिणपंथी राजनीति – इन सबका मुकाबला करते हुए उन्होंने पार्टी को मजबूत बनाया।

बरसों से नव संशोधनवादियों की काली करतूतों का गढ़ बने पश्चिम बंगाल में जनता पर अकथनीय अत्याचार व जुल्म होते रहे। सामाजिक फासीवादियों के शासन में कोलकाता महानगर के विश्वविद्यालयों से लेकर प्रदेश के दूर–दराज के गांव–बस्ती तक कहीं भी सीपीएम के हुक्म का कोई विरोध नहीं कर सकता था। बंगाल में भूमि सुधारों के अमल को लेकर यह कहते हुए ढिंढ़ोरा पीटा जाता था कि देश के किसी भी हिस्से में ऐसा नहीं हुआ जिससे वहां के किसान सुखमय जीवन जी रहे हैं। लेकिन क्रांतिकारी कार्यक्रमों ने उनके इस ढोंगी प्रचार की पोल खोल दी। पश्चिम बंगाल के कई इलाकों में फिर से क्रांतिकारी क्रियाकलापों के शुरू हो जाने से व्यापक शोषित जनता में उत्साह का संचार हुआ।